उपसंहार

विचार-विश्लेषण के उपरांत यह स्पष्ट हुआ है कि 'मागध' जी ऐसे हिंदी भाषी विद्वान है जिन्होंने असमिया साहित्य को आलोचना के माध्यम से हिंदी साहित्य के बृहत वाङ्मय में प्रतिष्ठित किया है । आप ऐसे गवेषक आलोचक हैं जिनकी गवेषणात्मक आलोचना न केवल हिंदी बल्कि असमिया भाषा साहित्य पर भी आधारित है ।

शोध प्रबंध में आलोचना के उद्भव-विकास पर चर्चा करते हुए आलोचना क्षेत्र से जुड़े काफ़ी तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है । आलोचना शब्द की व्युत्पत्ति से लेकर आलोचना के अर्थ तथा स्वरूप पर भी विचार किया गया । आलोचना के भिन्न प्रकार पर दृष्टिपात किया गया । इस दौरान हमें आलोचना के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्ष को भली-भांति जानने का अवसर मिला । आलोचना की परिभाषाओं और परंपरा पर विचार करते हुए आलोचना संबंधी पाश्चात्य, भारतीय(हिंदी) और असमिया परिभाषा पर अलग-अलग रूप से और संक्षिप्त रूप में आलोकपात किया गया है । आलोचना की परंपरा को देखा जाए तो प्रारम्भिक अवस्था में पाश्चात्य एवं प्राच्य में स्वतंत्र रूप से आलोचना का आरंभ तथा विकास होता रहा परंतु कुछ समय बाद पाश्चात्य आलोचना का प्रभाव हिंदी आलोचना साहित्य पर पड़ा और धीरे धीरे अन्य भारतीय भाषाओं की आलोचना पर भी इसका प्रभाव पड़ता गया । असमिया आलोचना साहित्य भी इससे अछूता न रह पाया । इस तरह पाश्चात्य के प्रभाव से परंतु सम्पूर्ण स्वतंत्र रूप में हिंदी तथा असमिया आलोचना साहित्य का विकास होता गया और लगातार हो रहा है । इसी क्रम में हम प्रो॰ 'मागध' का नाम ले सकते हैं । जिनकी आलोचनात्मक कृतियों के कारण असमिया आलोचना साहित्य को हिंदी साहित्य के बृहत्तर क्षेत्र में प्रविष्ट होने का मौका मिला । हिंदी साहित्य भी असम के इन महानुभवों की रचनाओं की आलोचना से सम्बृद्ध हुआ ।

'मागध' जी ने हिंदी ही नहीं असमिया साहित्य के भंडार को भी परिपुष्ट किया है । उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल हिंदी साहित्य एवं भाषा पर विस्तृत प्रकाश डाला बल्कि

असमिया आलोचनात्मक ग्रंथों के माध्यम से असमिया वैष्णव साहित्य, रामायणी साहित्य तथा असम में वैष्णव मत के प्रचारक शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव को राष्ट्रीय प्रेक्षापट में लाए और हिन्दू धर्म में प्रचलित पूज्य देव-देवी की प्रमाणिकता को भी प्रतिष्ठित किया। हिंदी साहित्य के इतिहास, भारतीय अलंकार परंपरा, अलंकारों का वर्गीकरण, परिभाषा, महत्त्व, संघटना और आधुनिक कविताओं में अलंकारों का विधान आदि विषयों को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने ग्रंथ तथा लेखनियों के जरिए हिन्दू देवी-देवता विषयक भ्रामक विचार धारा का तर्क सहित खंडन किया है और उनकी प्रमाणिकता को प्रतिष्ठित किया है। असमिया आलोचनात्मक कृतियों के माध्यम से वैष्णव धर्म के प्रवर्तक शंकरदेव और माधवदेव एवं असमिया समाज व्यवस्था को राष्ट्रीय स्तर पर लाए और भारतीय साहित्य के वाङ्मय को समृद्ध किया। उन्होंने अपनी रचनाओं तथा लेखों के जरिए अपने भावों, विचारों को तो प्रकट किया ही, साथ ही साहित्य के क्षेत्र में प्रमाणिकता की उपोयोगिता को भी प्रतिष्ठित किया। आलोचना ही साहित्यिक कृति या कृतिकार को परिपूर्णता प्रदान करती है। असमिया साहित्य आलोचना का प्रारम्भ से लेकर उसके विकाश तथा असमिया के गण्य-मान्य आलोचक और उनकी आलोचना पर संक्षिप्त रूप से विचार किया गया और यह पाया गया कि अरुणोदोई युग से असमिया आलोचना का प्रारम्भ हुआ और आज भी असमिया आलोचना का विकाश हो रहा है।। इनमें कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' जी का नाम उल्लेखनीय है, जिन्होंने असमिया आलोचना साहित्य को राष्ट्रीय क्षेत्र में उभरा।

साहित्यकार का किसी भी साहित्यिक विधा रचने के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। यह कारण या प्रेरणा स्रोत ही लेखक को लिखने के लिए अनुप्रेरित करता है। 'मागध' जी जब असम आए तब कई असमिया विद्वानों से अनुप्रेरित होकर उन्होंने असमिया सीखी और असमिया साहित्य का अध्ययन करने लगे। भक्ति साहित्य की ओर उनका झुकाव पहले से ही था, अब असमिया भाषा साहित्य का अध्ययन कर उन्हें श्रीमंत शंकरदेव, श्री माधवदेव, असम में रामायण पर आधारित रचना आदि को जानने का मौका मिला और उनके द्वारा रचित साहित्य का आस्वाद ले पायें। परंतु 'मागध' जी साहित्य के आस्वादन से ही संतुष्ट नहीं थे, उन्होंने इस

क्षेत्र में लिखना भी प्रारम्भ किया । जिसके फलस्वरूप असमिया वैष्णव कवि श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव के साहित्यिक प्रतिभा का आस्वाद हिंदी पाठक ले पायें ।

प्रो॰ 'मागध' जी के आलोचक व्यक्तिव पर विचार करते हुए पाया गया कि आप प्रखर आलोचक व्यक्तित्व के अधिकारी है । उनकी आलोचनात्मक रचना पढ़ने से ही उनकी गवेषक आलोचक दृष्टि तथा उनके अध्ययन पुष्टता का पता चलता है । । उनकी समालोचना मूलतः गवेषणात्मक है । किसी भी कृति या कृतिकार की समालोचना करने के पूर्व वे उसका गहन अध्ययन, मनन और अनुशीलन करते तत्पश्चात अपना अभिमत व्यक्त करते थे । 'मागध' जी को अध्यापक, आलोचक, गवेषक, अनुवादक, संपादक, वक्ता, प्रशासक आदि रूपों में काफ़ी ख्याति मिली हैं ।

'मागध' जी ने असमिया आलोचनात्मक ग्रंथों के माध्यम से असम में वैष्णव मत के प्रचारक शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव तथा असमिया रामायणी साहित्य को राष्ट्रीय प्रेक्षापट में प्रतिष्ठित किया । उनकी साहित्यिक संरचनाओं का गहन अध्ययन कर इन महापुरुषों के विचारों को हमारे समक्ष रखा । असम प्रांत में रामायणी साहित्य पर हुए विभिन्न कृतियों की ओर हमारी दृष्टि आकर्षित की और उन पर गहन विचार किया । इनके माध्यम से असमिया आलोचना साहित्य में 'मागध' जी ने उल्लेखनीय योगदान दिया और राष्ट्रीय स्तर पर असम में वैष्णव धर्म के प्रवर्तन करनेवाले शंकरदेव और माधवदेव एवं असम प्रांत के रामायणी साहित्य के जरिए भारतीय साहित्य को समृद्ध किया हैं । उनकी गवेषणापुष्ट असमिया आलोचना से शंकरदेव, माधवदेव, वैष्णव साहित्य, असमिया रामायणी साहित्य के कई अनदेखे पहलू सामने आए और असमिया से परे हिंदी साहित्य और हिंदी साहित्य के अध्येता उससे रुबरु हो सके । उनके आलोचक व्यक्तित्व को देखे तो प्रो॰ अनंत कुमार नाथ की यह उक्ति सिद्ध होती है कि 'मागध' जी विवेच्य कृति या कृतिकार की अंतरात्मा में प्रविष्ट होकर उसकी आलोचना करते हैं ।

अन्त में यह स्पष्ट होता है कि 'मागध' जी का प्रखर आलोचक व्यक्तित्व समालोचना के क्षेत्र को समेटता है, जो हिंदी ही नहीं अपितु असमिया साहित्य से भी संबंधित है । उनकी आलोचनात्मक कृतियाँ, हिंदी साहित्य को भारत की अन्य आंचलिक भाषा साहित्य को अपने कोढ़ में समाने के लिए दिशा निर्देश करती हैं ताकि हिंदी साहित्य ओर सम्बृद्ध हो सके ।